जागतिकीकरण : साहित्य, समाज और मीडिया

प्रा. नयन भादुले -राजमाने
गोविंदलाल कन्हैयालाल जोशी
(रात्रीचे) वाणिज्य महाविद्यालय लातूर.

मानव जाती के विकास प्रक्रिया के पहले जब राष्ट्र यह संकल्पना अस्तित्त्व में नहीं थी। उस समय इन्सान अभी भी गुंफा में ही रहता था। उसकी मूलभूत आवश्यकताओं में से खाना खाने की जरुरत वह शिकार करके ही पूरी करता था। स्वयंम के लज्जा रक्षा के लिए वह जानवरों की खाल का उपयोग करता था। ऐसे बहोत ही कम आवश्यकताओं के समय हर इन्सान खुद शिकार करते हुऐ अपना जीवन यापन कर सकता था। इसके लिए किसी अन्य पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं थी। उसके बाद समय बदल चुका। मानवी संस्कृति का विकास हुआ। इन्सान छोटे-छोटे समुह में पानी के पास रहकर जीवनयापन करने लगा तथा उसकी आवश्यकताऐं बढने लगी। खाने के मामले में सिर्फ शिकार पर निर्भर न रहते हुऐ धान उगाने की शुरुवात हुई। रोटी-कपडा-मकान यह इन्सान के सोना-चांदी के जवाहरात तथा लोह, लकडी, तांबे-पितल की चीजें इनकी आवश्यकता बढी। समाज का हिंस्त्र श्वापदों के और शत्रु इनसे समाज को सुरक्षित रखने हेतु सेना की जरुरत पडने लगी। मानवता की संस्कृति जैसे जैसे विकास हुआ वैसे वैसे समाज की जरुरते बढने लगी। अब हर एक आदमी यह जरुरते पुरी करने के लिए पूरा नहीं पड रहा था। इसमें से ही वस्तुविनिमय पध्दती का जन्म हुआ। इस पध्दती का महत्त्व ऐसा है कि हर एक इन्सान को जरुरते बहुत सारी होती है। और यह जरुरते पुरी करने के लिए हर एक के पास समय तथा कौशल्य नहीं रहता। जैसे जो इन्सान खेती अच्छी तरह से करता है वह सोने के गहने अच्छी तरह बना नहीं पायेगा। इसका मतलब है कि जिस इन्सान को जो अच्छा आता है वह वे करें।

अब इन सबका जागतिकीकरण से संबंध किस तरह का है? वस्तू, सेवा और मनुष्य शक्ति इनकी अनिर्बंध लेन-देन देश के सीमाओं के बाहर होने लगी थी। तो प्रत्येक समाज Production Possibility Frontier के पास पहुँचेगा तो सही अर्थ में जागतिकीकरण का पहला फायदा अर्थात सारे समाज के पास पहुँच जाएगा। इसके आगे जागतिकिकरण का अगला फायदा है, जग में रहने वाले सभी इन्सानों को सही अर्थ में एक साथ ले और खुद का काम करें। वर्तमान युग में बाजारवाद के कारण यहाँ सोच में बदलाव आया वहीं सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने माध्यमों के स्वरुप और उसकी भूमिका को भी बदल दिया। बाजार के प्रभाववश मीडिया का उद्देश केवल सामाजिक विकास न होकर अपनी आर्थिक उन्नति पर केंद्रित हो गया। इसकारण साहित्य समाज और मीडिया के सम्बधों और उसकी भूमिका पर प्रकाश डालना जरुरी है।

साहित्य समाज और मीडिया :

साहित्य समाज का दर्शन है। साहित्यकार जगत एवं जीवन में जो कुछ देखता तथा अनुभव करता है, उसे जीवनोपयोगी और उद्देशपुष्ट बनाकर भाषा के सहारे अभिव्यक्त करता है। यही अभिव्यक्ति साहित्य का रुप ग्रहण कर लेती है। इसमें अवश्यकता होती है संवेदना और लोकमंगल के समावेश की। संवेदना इसलिए कि साहित्य को समाज तक पहुँचना है, सामाजिकों से जुडना है और लोकमंगल इसलिए कि उसे समाज को असत्य से सत्य तथा अंधकार से प्रकाश की और ले जाना है यथार्थ तत्त्व का बोध कराना है।

जिस तरह साहित्य समाज के लिए उपयोगी है उसी तरह समाज, साहित्य के लिए। समाज के अभाव में साहित्य की कल्पना तक नहीं की जा सकती। साहित्य रचना की प्रेरणाएँ समाज की जमीन से ही जन्म लेती है। तब तक संवेदनाएँ उत्पन्न नहीं होती। जब समाज अशक्त हो जाता हैं, उसमें विरोध करने की क्षमता नहीं रह जाती और राजनीतिक ताकतें आदर्शों तथा मूल्यों को नष्ट कर राक्षसी अट्टहास करने लगती है, तब साहित्य,

समाज के बीच एक सरंक्षक की भूमिका के साथ उपस्थित होता है, क्योंकि साहित्य अपने जन्म से ही अन्याय का विरोधी रहा है इसलिए वह समाज को भी उसकी अस्मिता का बोध कराता है और उसे संघर्षशील बनाता है। साहित्य समाज के लिए आदर्श गढ़ता है, जीवन मूल्यों की संरचना करता है। वहीं समाज साहित्यकार को अपने सुख-दु:ख, दीनता-हीनता को शब्दबध्द करने के लिए उकसाता रहता है। साहित्य सृजन की प्रेरणा प्रदान करता है।

साहित्य और समाज के समान ही मीडिया और समाज के बीच भी बहुत गहरा रिश्ता है। मीडिया, समाज में ही फलता-फूलता है। एक समय था जब कठपुतलियाँ, लिलाएँ, नाटक मंडलियों हमारे समाज में संदेश देने तथा विभिन्न रुचियों के जागरण के माध्यम का कार्य रही थी। आज उनकी जगह हाईटेक मीडिया ने ले ली है इस मीडिया ने समाज के प्रत्येक तबके को प्रभावित किया है। इससे न तो उत्पादक छूटा है और न ही उपभोक्ता, न शासक और न ही शासित। शिक्षित तथा अशिक्षित भी इससे अछूत नहीं है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति आधुनिक मीडिया की आधुनिकता तथा परंपरा के द्वंद्व में उलझा हुआ है।

मीडिया शब्द मीडियम से बनता है और बहुवचन रुप है। हिंदी में इसके लिए संचार माध्यम शब्द का प्रयोग किया है। संचार में अनेकता है। फलस्वरुप मीडिया के प्रचार के पूर्व हमारे यहाँ संचार का वाचिक माध्यम उपलब्ध था। साहित्य को जनता तक पहुँचाने के लिए बाद में उसे भूर्जपत्र पर लिखकर उसे ग्रंथ का रुप दिया जाने लगा। मुद्रित माध्यम के आ जाने पर वाचिक ऐसे ग्रांथिक माध्यमों का प्रयोग कम हो गया। ग्रंथो की छपाई होने लगी। पत्र-पत्रिकोओं का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इसके कारण कुछ लोगों तक सीमित रहने वाला साहित्य अधिक से अधिक जनसमुदाय तक पहुँचने लगा। रेडिओ तथा टि.व्ही. के आगमन ने मीडिया को जैसे पँख लगा दिया।

जागतिकीकरण के दौर में मीडिया, जिस प्रकार समाज से जुडा है, उसी प्रकार साहित्य से भी। वैसे यदी देखा जाय तो साहित्य स्वयं भी एक मीडिया ही है। मीडिया के समान ही वह भी विचारों एवं संदधों का वाहक है। एक देश का साहित्य जब दूसरे देश में जाता है। तब अपने साथ वहाँ के विचार, संस्कृति आदि को भी ले जाता है। किंतु आज साहित्य, मीडिया के हाथ का खिलौना हो गया है। मीडिया ने साहित्य की आत्मा एवं संवेदना को समाप्त प्राय कर दिया है। उसकी चिंतन शक्ति छीन ली है और महत्त्वपुर्ण अवदान की भूख को नष्ट कर दिया है। साहित्य की मौलिकता, अमरता तथा दिव्यता आदि विशेषताँओं को वह महत्त्वहीनता को स्तर तक उतारने का प्रयत्न कर रहा है। आज साहित्य और समाज के संबंध में मीडिया की चाहे जो भूमिका हो, आधुनिक हिंदी साहित्य के विकास में उसका बहुत बडा योगदान रहा है। हिंदी को नये रुप में डालने के उद्देश से भारतेन्दु जी ने 'हरिशचन्द्र मैगजीन' नाम की मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया था। बाद में उसका नाम बदलकर 'हरिचंद्र चन्द्रिका' कर दिया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार हिंदी गद्य का ठीक परिष्कृत रुप पहले-पहल इसी 'चन्डिका' में प्रकट हुआ।उन्होंने 'कवि वचन सुधा' नामक पत्रिका का भी प्रकाशन किया था। जिसमें पहले पुराने ढंग की कविताएँ छपती थी परंतु कालातंर में लेख भी प्रकाशित किये जाने लगे। बालकृष्ण भट्ट ने 'हिंदी प्रदीप' नामक पत्र निकाला था तो प्रताप नारायण मिश्र ने 'ब्राह्मण' नामक पत्र बदरीनारायण प्रेमधन ने 'आनन्द कांदबिनी' तथा 'नागरी नीरद' नामक दो पत्रों का प्रकाशन किया। इन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से तत्कालीन लेखकों ने हिंदी भाषा का एक ऐसा स्वरुप विकसित किया जिसमें टकसाली पन की जगह लोकोपयोगिता की प्रचुरता है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती के माध्यमसे हिंदी भाग के विकास में योगदान दिया है। प्रसादजी ने 'इन्दु' का प्रकाशन किया तो पंत ने 'रुपाभ' का। निराला जी ने अपने व्यक्तित्व के अनुरूप 'मतवाला' का प्रकाशन आरंभ किया। आगे के तमाम साहित्यकारों के गद्य को निखारने में मीडिया की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

आज के साहित्यकार भी किसी न किसी प्रकार पत्र-पत्रिकाओं से अपना संबंध बनाए हुए है। पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त रेडिओ, टी.व्ही. के साथ भी साहित्यकारों का सतत जुडा रहा है, और उससे हिंदी साहित्य के विकास में पर्याप्त सहायता मिली है। रेडिओ के आगमन से हिंदी में रेडिओ रुप कों लिखने का सिलसिला शुरु हुआ। सिनेमा तथा टेलिव्हिजन ने हिंदी में बहुत से रचनाकारों को प्रतिष्ठित किया।

सारांश :

अंततः हम कह सकते है, समय सदा एक-सा नहीं रहता। उसमें अच्छे-बुरे बदलाव भी आ जाते है। आज की हाईटेक मीडिया हिंदी साहित्य से उसकी गंभीरता तथा लोकमंगलकारी प्रवृत्ती को दूर कर रही है। भाषा के संदर्भ में भी कुछ बदलाव हो रहे है। अर्थ गांर्भिय एवं चिंतन शक्ति को क्षीणकर मीडिया साहित्य को खोखला करने का पूरा प्रयास कर रही है। वैसे तो समाज और साहित्य भी मीडिया हि है क्योंकि ये भी अनुभवों का वर्णन, विचार-विनिमय तथा संशोधन करते है परंतु आज इस मीडिया, चाहे प्रिंट हो अथवा इलेक्ट्रानिक, साहित्य एवं समाज की संचार -शक्ति से बहुत अधिक संपन्न है। उसकी प्रवृत्ति आत्मकेंद्रित है और वह अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए किसी को अभद्र तथा अनुपयुक्त तथा किसी को भद्र एवं परमोपयुक्त प्रमाणिक कर सकता है। समाज की भावनाओं को जगाकर अपना उत्तर सीधा करना वह अच्छी तरह जानता है। जागतिकिकरण की इस हालत में साहित्य, समाज और मीडिया तीनों के बिखरने की संभावना ज्यादा दिखाई देती है। इससे बचने के लिए समाज, साहित्य और मीडिया परस्पर जुडे रहे। तीनों की बेहतरी का उद्देश लेकर चले।

संदर्भ :

१. मीडिया का यथार्थ- डॉ. रतन कुमार पाण्डेय, प्रथम संस्करण- २००८
२. नया मीडिया और नये मुद्दे- सुधीर पचौरी, प्रथम संस्करण -२००९
३. साहित्य, समाज और मीडिया, डॉ. शीमला प्रसाद दुबे, प्रथम संस्करण-२०१३
४. जनसंचार और विविध माध्यम -डॉ. शम्भुंनाथ द्विवेदी, प्रथम संस्करण २०१५

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com